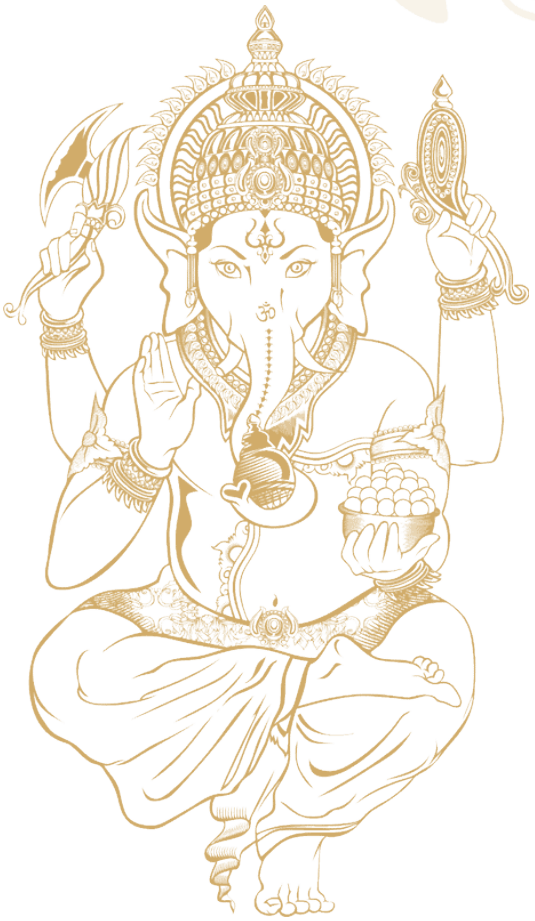

Chhaya

03 Jan 2026

03:35 PM

Hyderabad

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120944701**

तिथि 03/01/2026 **समय** 15:35:00 **वार** शनिवार **स्थान** Hyderabad **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:19
अक्षांश 17:22:00 उत्तर **रेखांश** 78:26:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:16:16 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	22:10:55 घं	गण	मनुष्य
वेलान्तर	00:04:24 घं	योनि	श्वान
सूर्योदय	06:47:20 घं	नाड़ी	आद्य
सूर्यास्त	17:54:19 घं	वर्ण	शूद्र
चैत्रादि संवत	2082	वश्य	मानव
शक संवत	1947	वर्ग	सिंह
मास	पौष	युँजा	मध्य
पक्ष	शुक्ल	हंसक	वायु
तिथि	1	जन्म नामाक्षर	छ-छवि
नक्षत्र	आर्द्रा	पाया(रा.-न.)	रजत-रजत
योग	ऐन्द्र	होरा	गुरु
करण	बालव	चौघड़िया	अमृत

विंशोत्तरी
राहु 1वर्ष 6मा 26दि
राहु
03/01/2026
31/07/2027

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	03/01/2026
चन्द्र	13/07/2026
मंगल	31/07/2027

योगिनी
मंगला 0वर्ष 1मा 1दि
मंगला
03/01/2026
04/02/2026

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	03/01/2026
संकटा	04/02/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			17:21:42	वृष	रोहिणी	3	चंद्र	शनि	---	0:00			
सूर्य			18:48:45	धनु	पूर्वाषाढ़ा	2	शुक्र	राहु	मित्र राशि	0.92	मातृ	पितृ	साधक
चंद्र			18:50:08	मिथु	आर्द्रा	4	राहु	चंद्र	मित्र राशि	0.99	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल		अ	20:19:23	धनु	पूर्वाषाढ़ा	3	शुक्र	गुरु	मित्र राशि	0.99	अमात्य	भ्रातृ	साधक
बुध		अ	08:08:20	धनु	मूल	3	केतु	गुरु	सम राशि	0.79	ज्ञाति	ज्ञाति	प्रत्यारि
गुरु	व		26:49:02	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	शुक्र	शत्रु राशि	1.50	आत्मा	धन	सम्पत
शुक्र		अ	18:01:48	धनु	पूर्वाषाढ़ा	2	शुक्र	मंगल	सम राशि	0.84	पुत्र	कलत्र	साधक
शनि			02:05:27	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	सम राशि	1.23	कलत्र	आयु	सम्पत
राहु	व		16:21:51	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	शुक्र	मित्र राशि		---	ज्ञान	जन्म
केतु	व		16:21:51	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	चंद्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	साधक

लग्न-चलित

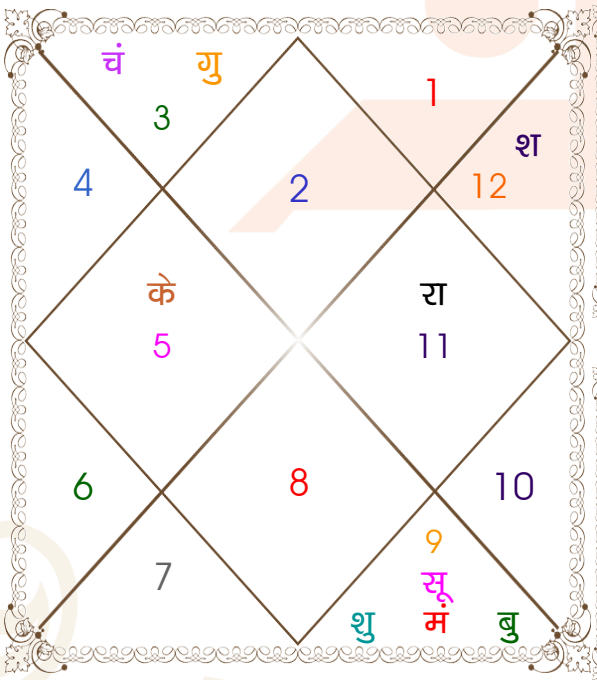

चन्द्र कुंडली

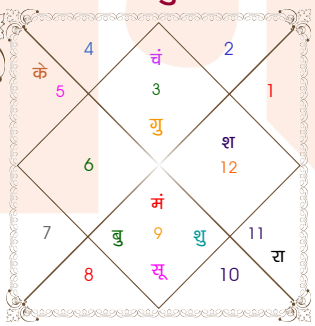

नवमांश कुंडली

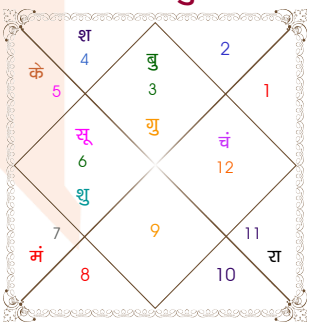

सर्वाष्टकवर्ग

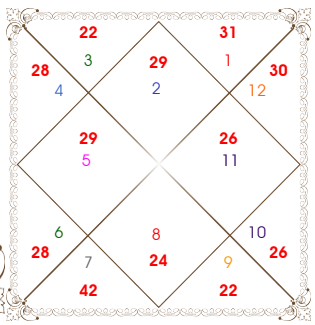

दशमांश कुंडली

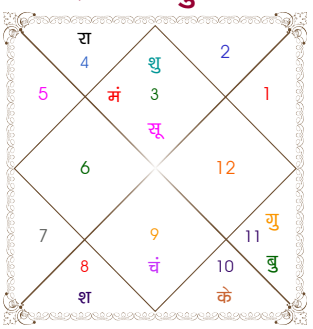

JYOTIRVEDA
252,2nd floor VARDHMAN J.P. PLOT NO 8 DWARKA SEC.4 DWARKA NEW DELHI
7742424250
pandit.ved007@gmail.com

नक्षत्रफल

आप आर्द्रा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में पैदा हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि मिथुन तथा राशि स्वामी बुध होगा। नक्षत्रानुसार आपकी योनि श्वान, वर्ग सिंह, वर्ण शूद्र, गण मनुष्य तथा आद्य नाड़ी होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्मनाम का प्रथमाक्षर "छ" होगा।

आप अपने जीवन काल में व्यस्तता या अन्य कारणों से भोजन समय पर लेने में प्रायः असमर्थ रहेंगी। आप में शारीरिक लावण्यता भी अल्प मात्रा में ही विद्यमान रहेगी। आपके स्वभाव में क्रोध की प्रबलता रहेगी तथा यदा कदा छोटी छोटी बातों पर आप अनावश्यक क्रोध का प्रदर्शन करेंगी साथ ही समाज में अन्य जनों से उपकृत होने पर आप उनके उपकार को अल्प मात्रा में ही स्वीकार करेंगी। साथ ही आप कभी कभी दया एवं करूणा के स्थान पर कठोरता का भी प्रदर्शन करेंगी। समीपस्थ सम्बन्धियों की आप प्रिय रहेंगी तथा उनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सहानुभूति प्राप्त होती रहेगी।

क्षुधाधिको रूक्षशरीरकान्ति बन्धुप्रियः कोपयुतः कृतघ्नः।
प्रसूति काले च भवेत्किलार्द्रा दयाद्रचेता न भवेन्मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् आर्द्रा नक्षत्र में जन्म लेने वाला जातक क्षुधा से आतुर, रूक्ष शरीर वाला, कुपित रहने वाला, कृतघ्न तथा दया से हीन होता है।

आपमें चंचलता का भाव प्रबलरूप से विद्यमान रहेगा तथा आप किसी भी कार्य को स्थिर मन से करने में असमर्थ रहेंगी। साथ ही आप एक स्थान पर स्थिर नहीं रहेंगी तथा नित्य परिवर्तन की इच्छा करेंगी। आपके पास धनार्जन भी मध्यम रूप से ही होगा परन्तु शारीरिक बल से आप सर्वदा पूर्ण रहेंगी एवं अपने बाहुबल से समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगी। आपकी शिक्षा भी मध्यम ही रहेगी परन्तु आचरण श्रेष्ठ रहेगा।

कृतघ्नः गर्वितोहीनः नरो पापरतः शठः।
आर्द्रानक्षत्र सम्भूतो धनधान्य विवर्जितः।।
मानसागरी

अर्थात् आर्द्रा नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य कृतध्न, गौरव विहीन, पापी तथा धन एवं धान्य से हमेशा हीन होता है।

आपके मन में अभिमान का भाव भी विद्यमान रहेगा साथ ही आपको अत्यन्त परिश्रम से महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त होंगी। आपका सामान्य जीवन संघर्षमय रहेगा एवं परिश्रम पूवर्क आप जीविकार्जन करेंगी। अन्य लोगों के प्रति आपमें प्रेम का भाव भी रहेगा अतः सामाजिक जनों से सौहार्द अर्जित करने में समर्थ रहेंगी।

शठगर्वितः कृतघ्नो हिंस्रः पापश्च रौद्रर्क्षे।

बृहज्जातकम्

अर्थात् आर्द्रा नक्षत्र का जातक कुटिल हृदय वाला, अभिमानी, कृतघ्न, हिंसक प्रवृति वाला तथा पाप कर्म करने वाला होता है।

आप रजत पाद में उत्पन्न हुई हैं। अतः जीवन में आप धन सम्पति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी तथा कभी भी इसके अभाव की अनुभूति नहीं करेंगी। साथ ही जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को आप अर्जित करेंगी एवं प्रसन्नता पूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगी। आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा दानशीलता के भाव से नित्य युक्त रहेंगी। साथ ही आप में सहनशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा। आपको अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में शीघ्र ही इच्छित सफलता प्राप्त होगी। शरीर से आप अत्यन्त ही कान्ति युक्त रहेंगी तथा आपकी मुखाकृति भी सुन्दर एवं दर्शनीय रहेगी। समाज में आप आदरणीय तथा श्रद्धेय महिला समझी जाएंगी। आप का परिवार भी विस्तृत रहेगा। आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर होगी तथा सभी लोग आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। आप सांसारिक सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगी। विद्याध्ययन के क्षेत्र में आप पूर्ण रूप से सफल रहेंगी तथा एक विदुषी के रूप में ख्याति अर्जित करने में सफल होंगी। इसके अतिरिक्त आप प्रायः अल्प मात्रा में बोलना ही पसन्द करेंगी।

आप मिथुन राशि में पैदा हुई हैं। अतः आपकी आखें अल्परक्तता लिए हुए श्यामवर्ण होंगी तथा बाल घुंघराले होंगे। आपके शरीर के अंग पुष्ट एवं स्वस्थ होंगे एवं नासिका उन्नत होगी। विभिन्न प्रकार के शास्त्रों के अध्ययन में आपकी अभिरूचि होगी तथा यत्नपूर्वक इनका अध्ययन करके ज्ञानार्जन करेंगी। आप प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से दूतिका या सन्देश वाहिका के कार्य से संबंधित रहेंगी तथा इसमें सफल भी होंगी। आपकी बुद्धि कुशाग्र होगी तथा इसी कुशाग्रता के बल पर आप किसी भी अन्य व्यक्ति के मन की बात को जान लेने में सफलता प्राप्त करेंगी। आपके अच्छे तथा विनम्र व्यवहार से सभी का ध्यान आपकी तरफ आकर्षित रहेगा। आपकी वाणी उत्तम तथा मधुर होगी जो सुनने वाले को अत्यन्त प्रिय लगेगी। हंसने तथा हंसाने के कार्य में आप अत्यन्त चतुर होंगी। संगीत में भी आपकी रूचि रहेगी तथा नृत्यशास्त्र की आप अच्छी जानकारी रखने वाली होंगी।

स्त्रीलोलः सुरतोपचारकुशलताम्रेक्षणः शास्त्राविद्।
दूतः कुञ्चिद् मूर्धजः पटुमति हास्योद्गिग द्यूतवित्।।
चार्वाङ्गाः प्रियवाक् प्रभक्षण रूचिर्गीतप्रियो नृत्यवित्।
क्लीबैर्याति रतिं समुन्नतश्चन्द्रे तृतीयर्क्षगे।।

बृहज्जातकम्

आपके शरीर से अधिकांश नसें बाहर दिखाई देंगी तथा हाथ की हथेली मछली के चिन्ह से युक्त होगी। आप देखने में अत्यन्त सुन्दर होंगी साथ ही काव्य लेखन की प्रतिभा से आप हमेशा युक्त रहेंगी तथा इस संसार में समस्त भौतिक सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करने का आपको सुअवसर तथा सौभाग्य प्राप्त होगा। आप सौभाग्य से युक्त होकर पति को अपने वश में रखेंगी।

उन्नासश्यामचक्षु सुरतविधिकला काव्यकृद्भोग भोगी।
हस्ते मत्स्याधिपाङ्को विषय सुखरतो बुद्धिदक्षः सिरालः।।
कान्तः सौभाग्य हास्य प्रियवचनयुतः स्त्रीजितौ व्यायताङ्गो।
याति क्लीबैश्च रतिकर्म संख्यशशिनि मिथुनगे मातृयुग्मप्रपुष्टः।।
सारावली

आप हमेशा हास्य से युक्त रहेंगी तथा हंसने हसाने के कार्य को सम्पन्न करती हुई दीर्घायु को प्राप्त होंगी। आप भ्रमण तथा यात्रा करने में भी रूचिशील रहेंगी। घर में भी शान्ति तथा प्रसन्नता को प्राप्त करेंगी।

दीर्घायुः सुरतोपचारकुशलो हास्यप्रियो युग्मके।।
जातकपरिजातः

आप के सामाजिक संबंध काफी विस्तृत रहेंगे तथा बहुत से लोगों से आपके मैत्री संबंध भी होंगे जिनमें आप अत्यन्त लोकप्रिय रहेंगी। आप अपनी सुजनता तथा योग्यता से समाज में यथोचित सम्मान तथा गौरव को प्राप्त करेंगी।

प्रियकरः करमत्स्ययुतोनरः सुरतसौख्यभरो युवतीप्रियः।
मिथुन राशि गतौहिम गौ भवेत्सुजनतजनताकृत गौरवः।।
जातकाभरणम्

आप अपने काव्य लेखन में या भाषण देने में सदैव स्पष्ट वाक्यों का प्रयोग करेंगी जिसमें अन्य जन सरलता पूर्वक ग्रहण करने में सफलता प्राप्त करेंगे। आप अपने स्वजनों अर्थात् संबंधियों तथा समाज के अन्य लोगों के लिए कल्याण का भी कार्य करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगी। आपका स्वभाव पित, कफ युक्त तथा चरित्र उत्तम होगा।

मृदुरूपचित्तगात्रः श्लिष्टविस्पष्टवाक्यः।
परजनहितकर्ता पंडितौ हास्य युक्तः।।
प्रकृति शुभचरित्रं श्लेष्मचित्त स्वभावो।
भवति मिथुन जातो गीतवाद्यानुरक्तः।।
जातक दीपिका

आपकी आखें हमेशा चंचल रहेगी नृत्य तथा संगीत में आपका अत्यन्ताकर्षण रहेगा तथा अपने व्यक्तिगत गुणों तथा योग्यताओं से समाज में यश तथा गौरव की प्राप्ति करेंगी। भाषण देने की कला में भी आप निपुण होंगी। साथ ही जिस चीज़ का संकल्प एक बार मन में कर लेंगी उसे पूर्ण करके ही छोड़ेंगी चाहे उसके लिए कितना भी परिश्रम क्यों न करना पड़े। अपने सभी कार्यों को सम्पन्न करने की सामर्थ्य आप में विद्यमान रहेगी। न्याय में भी आपका विश्वास रहेगा तथा स्वयं न्यायवादी होंगी।

मृदुवाक्यो लोलदृष्टिर्दयालु मैथुनप्रियः।
गान्धर्ववित् कासरोगी कीर्तिभोगी धनी गुणी।।

गौरोदीर्घः पटुर्वक्ता मेधावी च दृढव्रतः।
समर्थो न्यायवादी च जायते मिथुने जनः।।
मानसागरी

आप मनुष्य गण में पैदा हुई हैं। अतः आप देवताओं तथा ब्राहमणों की अनन्य सेविका होंगी तथा श्रद्धा से उनको सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगी। अहंकार की भावना भी कभी कभी आपमें दृष्टिगोचर होगी। आपका मन दया तथा करूणा के भाव से परिपूर्ण रहेगा तथा यथा समय आप अपनी इस विशेषता का यत्नपूर्वक पालन करेंगी। शक्ति की आप में कमी नहीं रहेगी तथा पूर्ण शारीरिक बल रहेगा। आप एक से अधिक कार्यों अथवा कलाओं की ज्ञाता होंगी। साथ ही आपका शरीर स्वस्थ, सुन्दर एवं पुष्ट रहेगा। इसके अतिरिक्त आप बहुत से लोगों को सुख प्रदान करने वाली भी होंगी। ज्ञानार्जन में आपकी रूचि रहेगी तथा परिश्रम पूर्वक इसे प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करेंगी।

बड़ी बड़ी आखों से युक्त आप हमेशा अपने जीवन में समस्त धनैश्वर्य का पूर्णरूपेण उपभोग करेंगी तथा निशानेबाजी में भी आप कुशल होंगी। आप नगरवासियों को पूर्ण रूप से अपने प्रभाव में लाने में सफल रहेंगी तथा वे सब आपके कथनानुसार कार्य करेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

आप श्वान योनि में उत्पन्न हुई हैं। अतः आप हमेशा कार्य करने में व्यस्त रहेंगी तथा खाली बैठना आप अनुचित समझेंगी। उत्साह की आपके अन्दर कमी नहीं होगी। अतः सोत्साह कठिन से कठिन कार्य को भी निर्भय तथा बहादुरी से सम्पन्न करेंगी। परन्तु अपने भाई बन्धुओं से आपका परस्पर द्वेष चलता रहेगा। लेकिन माता पिता अथवा सास ससुर की आप अत्यन्त सेवा भाव तथा निस्वार्थ भाव से सेवा करेंगी एवं उनका सच्चा आशीर्वाद प्राप्त करेंगी।

सोद्यमः सुमहोत्साही शूरः स्वज्ञाति विग्रही।
मातृपित्रो सदाभक्तः श्वानयोनौसमुद्भवः।।
मानसागरी

अर्थात् श्वान योनि में उत्पन्न जातक उद्यमी, उत्साह से परिपूर्ण, शूरवीर, अपने बन्धुवर्ग से द्वेष रखने वाला तथा माता पिता का भक्त होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपके शुभ प्रभाव से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनकी पूर्ण वात्सल्य भावना रहेगी तथा जीवन में विद्य

ाध्ययन या धन संबंधी कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही उनसे आप अवसरानुकूल महत्वपूर्ण नैतिक शिक्षा भी ग्रहण करेंगी। इसके साथ ही वे आपको हार्दिक सहयोग देंगी। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध भी अच्छे रहेंगे।

आप भी उनसे पूर्ण प्रभावित रहेंगी तथा उनके कथनानुसार ही अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगी। साथ ही जीवन में उनकी सेवा तथा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से आप उनकी सहायता करती रहेंगी। अतः परस्पर मधुर संबंध एवं विश्वास होने के कारण आप आनन्दपूर्वक जीवन में उनका स्नेह प्राप्त करती रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य अष्टम भाव में विद्यमान है अतः पिता का आपके प्रति स्नेह का भाव रहेगा। उनका स्वास्थ्य ठीक होगा तथापि यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करते रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी पूर्ण सहायता करते रहेंगे। पिता से आप यदा कदा विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगी। साथ ही व्यापार आदि कार्यों एवं यात्रा आदि में भी वे आपका सहयोग करेंगे तथा वांछित निर्देश भी देंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने तथा सेवा करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में हमेशा उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे अस्वस्थ रहेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। जीवन में आप समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उन से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग अर्जित करती रहेंगी। धन धान्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा अतः यदा कदा विशिष्ट धन की प्राप्ति आप उनसे कर सकेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह भाव रखेंगी एवं अवसरानुकूल सुख दुःख में उनको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध भी ठीक ही रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें तनाव तथा कटुता की स्थिति भी उत्पन्न होगी लेकिन कुछ समय बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनका सहयोग करने के लिए करने के लिए उद्यत रहेंगी।

आपके लिए आषाढ़ मास, द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी तिथियां, स्वाती नक्षत्र, परिघयोग, सोमवार, तृतीय प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा सदा अशुभ फलदायक होंगे। अतः आप 15 जून से 14 जुलाई के मध्य 2,7,12 तिथियां, स्वाती नक्षत्र, परिघयोग में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रय आदि कार्य सम्पन्न न करें। अन्यथा लाभ की

अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही सोमवार, तृतीय प्रहर तथा धनुराशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखे। इस समय शरीर की सुरक्षा का भी पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक अशान्ति या शारीरिक व्याकुलता का आभास हो रहा हो अथवा व्यापार या नौकरी में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों या अन्य अशुभ फल हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको नित्य प्रातः तथा सायं काल गणेश जी के दर्शन करने चाहिए तथा बुधवार का व्रत रखना चाहिए। साथ ही पन्ना, हरा वस्त्र, घी, कपूर आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए तथा बुध के तांत्रीय मंत्र के 17000 जप करने से आपके मन की अशान्ति तथा शरीर की व्याकुलता दूर होगी तथा लाभमार्ग प्रशस्त होंगे।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।